प्रातः क्लास 6-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 बच्चों को समझाया गया है एक है ज्ञान दूसरा है भक्ति। ड्रामा में यह नूंध है ड्रामा के आदि मध्य अन्त को और कोई भी नहीं जानते। तुम बच्चे ही जानते हो। सतयुग मे मरने का कब भी डर नहीं। डर रहता है। जानते हैं एक शरीर छोड़ हमको दूसरा लेना है। दुःख की, रोने आद की बात ही नहीं। अभी इस समय यहां क्या बिचार है? मरने से डर रहता है। आत्मा को शरीर छोड़ने से दुःख होता है। डरते हैं। क्योंकि फिर दूसरा जन्म भी ले दुःख ही भोगना है। तुम तो हो संगम युगी। तुम बच्चों को बाप ने समझाया है अभी वापस चलना है। कहां? घर। वह भगवान का घर है ना। यह कोई घर नहीं है। जहां भगवान और तुम आत्मायें रहती हैं उसको ही घर कहा जाता है। वहां शरीर है नहीं। जैसे मनुष्य कहते हैं हम भारत में रहते हैं, घर में रहते हैं। वैसे तुम भी कहेंगे हम लोग अर्थात हम आत्मायें वहां अपने घर में रहते हैं। वह है ही आत्माओं का घर। यहां है जीवात्माओं का घर। उनको कहा जाता है मुक्तिधाम। मनुष्य पुरुषार्थ तो करते हैं वहां जाने लिए कि हम भगवान से जाकर मिलें। भगवान से मिलने लिए तो बहुत खुशी होनी चाहिए। यह तो आत्मा का शरीर है इनमें आत्मा का बहुत मोह पड़ गया है। इसलिए थोड़ी भी बिमारी होती है तो डर लगता है शरीर न छूट जाये। अज्ञान काल में डर रहता है। इस समय जब कि संगमयुगी हैं तुम जानते हो वापस जाना है बाप के पास। तो डर की बात ही नहीं। बाप ने युक्ति बहुत अच्छी बताई है। पतित आत्मा तो मेरे पास मुक्तिधाम मे आ नहीं सकता। वह है ही पवित्र आत्माओं का घर। यह है मनुष्यों का घर। यह शरीर बनते हैं 5तत्वों से। तो 5तत्व यहां रहने लिए खेंचते हैं। अकाश वगैरह.... वहां तो यह तत्व है नहीं। यह बिचार सागर मथन करने की युक्तियां हैं। यहां प्रकृति क्यों पड़ती है क्योंकि आत्मा ने यह जैसे प्राप्ती ले ली है। तो शरीर में ममत्व हो जाता है। नहीं तो हम आत्मायें वहां के रहने वाली हैं। अभी फिर पुरुषार्थ करते हैं वहां जाने लिए इस पुरानी शरीर को छोड़ देवें। जब तुम पावत्र आत्मायें बन जाते हो फिर तुमको सुख ही मिलता है। दुःख की बात ही नहीं। इस समय है ही दुःखधाम। तो यह 5 तत्व भी खेंचते हैं। ऊपर से नीचे आकर पार्ट बजाने लिए प्रकृति का आधार तो जरूर लेना पड़ता है। नहीं तो खेल चल न सके। यह खेल भी बना हुआ है। सुख और दुःख का। जब तुम सुख में थे तो 5तत्वों के शरीर से ममत्व नहीं रहता है। वहां तो पवित्र ही रहते हैं। इतना ममत्व नहीं रहता है शरीर में। इन 5तत्वों का ममत्व भी छोड़ देते हैं। हम पवित्र बने फिर वहां शरीर भी योगबल से बनते हैं। इसलिए माया खेंचती ही नहीं। हमारा वह शरीर योगबल का है। इसलिए दुःख है नहीं। ड्रामा कैसे वन्डरफुल बना हुआ है। यह भी बड़ी महीन समझने की बातें हैं। जो अच्छे बुद्धिवान हैं और सर्विस में तत्पर रहते हैं वह अच्छी रीत समझा सकते हैं। बाबा ने कहा है धन दिये धन ना खूटे। दान करते रहेंगे तो धारणा भी होगी। नहीं तो धारणा होना मुश्किल है। ऐसे मत समझो लिखने से धारणा हो जायेगी। हां लिख किसके कल्याण के लिए पाईन्ट भेज सकते हैं तो और बात है। खुद का तो काम नहीं आते हैं। कोई तो कागज लिख कर फिर फालतू फेंक देते हैं। यह भी अन्दर में समझ होनी चाहिए। मैं लिखता हूं फिर वह काम में आते हैं। लिख कर और फेंक दिया। तो उससे क्या फायदा। वह भी आत्मा अपने को जैसे कि ठगती है। यह तो धारण करने की चीज़ है। बाबा ने कोई लिखा हुआ थोड़े ही कंठ किया है। बाप तो रोज समझाते ही रहते हैं। पहले2 तो तुम्हारा बाप से कनेक्शन हो। बाप की याद से ही आत्मा पवित्र बन जायेगी। फिर वहां भी तुम पवित्र रहते हो। आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र रहती है। फिर वह बल खलास हो जाता है तो 5तत्वों का बल आत्मा को खेंचती है। आत्मा को घर जाने लिए शरीर छोड़ने दिल नहीं होती है। डर नहीं तो इसमें तो खुशी होनी चाहिए। तुम तो पावन बनते हो। शरीर तो ऐसे छोड़ेंगे जैसे मक्खन से बाल। शरीर से सभी चीजों से ममत्व मिटा देना है। हम आत्मायें नये आये थे, हम पवित्र थे। इस दुनिया से ममत्व नहीं था। वहां शरीर छूटे तो कोई रोते नहीं हैं। कोई तकलीफ नहीं। बिमारी नहीं। शरीर मे ममत्व नहीं। जैसे आत्मा

पार्ट बजाती है एक शरीर बूढ़ा हुआ तो फिर दूसरा ले लेती है। पार्ट बजाने लिए। वहां तो रावण राज्य है नहीं हैं। तो इस समय दिल होती है जावें बाबा के पास। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह ज्ञान बुधि में हैं। बाप कहते हैं बच्चे पवित्र बन कर आना है। अभी तो पतित हैं इसलिए 5तत्वों का जो यह पुतला है उन से ममत्व हो गया है। आधा कल्प से इनको छोड़ने दिल नहीं होती है। नहीं तो विवेक कहते हैं शरीर छूट जाये हम बाबा के पास तो चले जावें। तुम अभी पुरुषार्थ करते हो हमको पावन बन बाबा के पास जाना है। बाबाने कहा है तुम तो मेरे थे। अभी फिर मुझे याद करो तो आत्मा पवित्र बन जावेगी। फिर शरीर धारण करने में कोई तकलीफ नहीं होगी। अभी शरीर में मोह है तो डाक्टर आद को बुलाते हैं। तुमको तो खुशी रहनी चाहिए हम जाते हैं बाबा के पास। इस शरीर से अभी हमारा कनेक्शन नहीं हैं। यह शरीर तो पार्ट बजाने मिला है। वहां तो आत्मा और शरीर दोनो ही बड़ी तन्दुरुस्त रहती है। दुःख का नाम ही नहीं होता। तो बच्चों को कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। अभी हम बाबा के पास जाते हैं। क्यों नहीं इस शरीर को छोड़ कर जावें। परन्तु जब तक योग लगा कर पवित्र न बने हैं, कर्मातीत अवस्था न बनी है तो जा नहीं सकते। यह ख्याल अज्ञानी मनुष्यों को नहीं आ सकती है। तुम बच्चों को आवेगा। अभी हमको जाना है। पहले तो आत्मा मे ताकत होती है। खुशी होती है। कब डर नहीं रहता। यहां दुःख है इसलिए मनुष्य भक्ति आद करते हैं। परन्तु वापस जाने का रास्ता तो जानते ही नहीं। जाने का रास्ता एक बाप ही बताते हैं। हम बाबा के पास जावें इसके लिए खुशी होती है। बाप समझाते हैं यहां तुम्हारा शरीर में मोह है। यह मोहब्बत निकालो। यह तो 5तत्वों का शरीर है। यह सभी माया ही है। इन आंखों से जो कुछ आत्मा देखती है सब माया ही माया है। यहां हर चीज़ में दुःख ही है। कितना गन्द है। स्वर्ग में तो शरीर भी फर्स्ट क्लास, महल भी फर्स्टक्लास मिलेंगे। दुःख की बात ही नहीं। खुल कैसा बना हुआ है। तो यह चिन्तन में आना चाहिए ना। बाप कहते हैं और कुछ नहीं समझते हो अच्छा सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। स्वर्ग में चले जावेंगे। हम तो आत्मा हैं यह शरीर रूपी दूम्ब बाद में मिला है। इन में हम क्यों फंसे हैं। बाप समझाते इनको रावण राज्य कहा जाता है। रावण राज्य में दुःख ही है। सतयुग में दुःख की बात ही नहीं। अभी बाबा से हम जैसे कि शक्ति लेते हैं। कैसे लेते हैं, जरूर बाप को याद करने से। क्यों कि कमजोर बन गये हैं। देह अभिमान है सब से कमजोर। तो बाप बैठ समझाते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। यह बन्द नहीं हो सकता। मोक्ष आद की बात ही नहीं। यह तो बना बनाया ड्रामा है। कहते भी हैं चिन्ता ताकि कीजिए जो अनहोनी होयें। पास्ट हो गया। सो फिर भी होना ही है। चिन्ता की बात ही नहीं। यहां चिन्ता लगती है। बाप कहते हैं यह तो ड्रामा है ना। बाप ने रास्ता तो बताया ही है। ऐसे तुम मेरे पास पहुंच जावेंगे। मकान से बार निकल जावेगा। तुम सिर्फ मुझे याद करो तो आत्मा पवित्र हो जाये। पावन बनने की और कोई युक्ति नहीं। अभी तुम समझते हो हम रावणराज्य में बैठे हैं। वह है ईश्वरीय राज्य। ईश्वरीय राज्य और आसुरी राज्य का खेल है। ईश्वर कैसे आकर स्थापना करते यह किसको भी पता नहीं हैं। बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वह ही आकर समझाते हैं। अभी तुमसारा ज्ञान समझ रहे हो फिर यह सारा ज्ञान भूल जावेगा। जिस पढ़ाई से हम यह पद पाते हैं वह फिर एकदम भूल जाता है। स्वर्ग में गये और नालेज गुम हो जाती है। भगवान ने डबल सिरताज कैसे बनाया वह कुछ जानते नहीं। यह भी नहीं जानता था। तो दूसरे शास्त्र आद पढ़ने वाले क्या जानेंगे। उनको टच भी नहीं होगा। तुम आकर सुनते हो झट टच होता है। है तो सारा गुप्त। बाप सुनाते हैं, देखने में आता है क्या। समझ में आता है। जैसे आत्माको देखा है क्या। समझते हैं आत्मा है। हां दिव्य दृष्टि से देखी जा सकती है। बाबा कहते हैं देखने से भी क्या समझेंगे। आत्मा है तो छोटी बिन्दी ना। आत्मायें तो अनेक हैं। 10-20-50 का भी तुम साक्षात्कार करेंगे। एक से तो कुछ पता भी न पड़े। एक आत्मा को देखने से समझ भी न सके। बहुतों का साक्षात्कार होता है

लूम कैसे पड़े यह आत्मा है या परमात्मा है। फर्क का मालूम नहीं पड़ता। बैठे2 छोटी2 आत्मायें देखने में आती है तो समझा जाता है आत्मायें हैं। यह थोड़े ही जाना है आत्मायें हैं या परमात्मा है। अभी तुम समझते हो इतनी छोटी सी आत्मा में ताकत कितनी है। इतना दम्ब निकल जाता है, आत्मा खुद तो मालिक है। एक शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करती है पार्ट बजाने लिए। है कितनी कुदरत। शरीर बिमार पड़ता है या कोई दिवाला आद निकालते हैं तो समझाते हैं इससे तो शरीर ही छोड़ दें। आत्मा निकल जावेगी दुःख से छूट जावेगी। परन्तु पापों का बोझा जो सिर पर है वह कैसे छूटे। तुम पुरुषार्थ करते ही हो कि याद से पाप विनाश हो। रावण के कारण बहुत पाप हुये हैं। जिस से छूटने का रास्ता बाप ही बतलाते हैं। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करते रहो। याद करते2 शरीर छूट जाये। तुम्हारे पाप आद सभी खत्म हो जावेंगे। याद करना भी मासी का घर नहीं है। मुझे याद करने लिए माया तुमको बहुत हैरान करती है। घड़ी भूला देती है। बाबा अनुभव भी सुनाते हैं मैं बहुत कोशिश करता हूं परन्तु फिर भी माया अटक डालती है। है भी दोनों याद इकट्ठे। इतना होते हुये भी घड़ी2 भूल जाता है। बड़ा कठीन है। घड़ी 2 यह याद पड़ा फलाना याद पड़ा। तुम तो बहुत अच्छी पुरुषार्थ करते हो। कोई तो गपोड़ा भी मारते हैं। 10-15 दिन चार्ट रख फिर छोड़ देते। इसमें तो बहुत ही खबरदारी "नी पड़ती है। समझते तो हैं जब प्युर हो जायेंगे कर्मातीत अवस्था को पहूंचेंगे तब ही विन करेंगे। यह ईश्वरीय लाटरी है ना। बाप को याद करते2, यह है याद की दौड़ी। बुधि से समझने की बातें हैं। भल कहते हैं हम याद करते हैं परन्तु बाबा कहते हैं याद करने आता ही नहीं है। पद में भी फर्क पड़ जाता है। कैसे राजाई स्थापन होती है। तुम ने अनेक बार राजाई की है। फिर गवाते हैं। बाबा हर 5000 वर्ष बाद पढ़ाते हैं फिर रावण राज्य में तुम वाममार्ग में चले जाते हो। जो देवतायें थे वही फिर वाम मार्ग में गिरते हैं। देवताओं के कितने गन्दे चित्र बनाये हैं। यह सभी निशानियां हैं। बाप समझाते हैं क्या2 कर दिया है। उन्हों का देवताओं की पोशाक तो नहीं देनी चाहिए। तो बाप बड़ी गुह्य2 बातें समझाते हैं। बाप को याद करने की। है तो बहुत सहज। शरीर छोड़ कर बाबा के पास चले जावें। समझो कोई गोली खा लेते हैं, समझते हैं भगवान पास चले जावेंगे। परन्तु विकर्म विनाश कैसे हो। वह है कौन जिसके पास जाने चाहते हैं। भल कोई काशी करवट खाते हैं परन्तु बाप कहते हैं मुझे जानते थोड़े ही हैं। मुझे जाने तब ही योगबल से विकर्म विनाश हो। वह तो पिछाड़ी में ही हो सकता है। बाकी वापस तो कोई भी आता नहीं। भल कुछ भी करे। योगबल तो मैं ही आकर सिखलाता हूं। फिर आधा कल्प योगबल होता नहीं। वहां तो अथाह सुख भोगते हैं। भक्ति-मार्ग में तो कुछ है नहीं। मनुष्य क्या2 करते रहते हैं। कितने हठयोग आद सिखाते हैं। कितना क्रोधी होते हैं। अकासुर, बकासुर, जरासंधी होते हैं। यह भी अभी के ही नाम हैं। प्रेक्टीकल में तुम देखते थे कैसे बच्चों को, स्त्रियों को भगा कर ले जाते थे। भगाते ही रहते हैं जहां-तहां। यहां कितना दुःख है। यह है ही कोसखाना। काम महाशत्रु है। यह आदि मध्य अन्त दुःख देने वाला है। इनको ही काम कटारी कहा जाता है। यह है रावण की हिंसा। वहां तो है ही अहिंसा देवी देवता परमोधर्म। शास्त्रों में तो अनेक बातें लिख दी हैं। ऐसी2 बातें लिखी है जो सुनने में भी लज्जा आती है। सीता के लिए क्या2 लिख दिया है। ऐसे थोड़े ही है हम शास्त्र नहीं पढ़ते थे। वह तो भक्ति हो गई। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। तो फिर भक्ति होती नहीं। ज्ञान से दिन हो गया फिर कोई तकलीफ ही नहीं। भक्ति है रात धक्का खाने की। वहां तो दुःख की बात ही नहीं। सब सभी समझाना पड़ता है। वह भी जो यहां का सेपलिंग होगा उनकी ही बुधि में बैठेगा। पीछे आया होगा तो कब भी नहीं बैठेंगे। यह बड़ी महीन बातें हैं। बाप कहते हैं जो बहुत ही तमोप्रधान है वही ज्ञान उठावेंगे। वन्डरफुल ज्ञान है जो सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। बहुत थोड़े समझने वाले होते हैं। ड्रामा में जो नूंध है उसमें कुछ फर्क नहीं पड़ सकता। भगवान किसके तकदीर को बदल न सके। मनुष्य तो समझते हैं भगवान क्या

है( नहीं।फिर मुरली -कैसे -सुनायेंगे।वन्डर खाते -हैं- ना। फिर बच्चे -होकर आते -हैं। -दिल- होती -है- ऐसा बाप -वर्सा देने -आये- है उन से -तो मिलें। पहले2 -तो पहचाना- चाहिए -कि -बताओ तुमको। कहने -बाप हैं। एक -है- लौकिक यूसस है -पारलौकिक। -एक है- एक है -शरीर का पिता। -दूसरा है -आत्माओं -का। -उस- बेहद -के- बाप को तो- सभी -याद- करते हैं। है -दुःख हर्ता, -सुख -कर्ता। -बच्चे आप -जब -आवेंगे -तो आपके स्वर्ग -का वर्सा -जरूर -लेंगे। ऐसे -बाप- को -तुम -जानते -नहीं- हो। न -जानने- -कारण ही- निश्चय के बन -गये -हो। -बात ऐसी -करनी चाहिए - जो एकदम -पक्की कर- देना- ) कर सकते हैं। परन्तु भगवान तो आते ही एक बार है। आकर स्वर्ग का रास्ता बताते हैं। और कुछ भी नहीं। अभी तुम बच्चों की कितनी विशाल बुद्धि हो गई है। और कोई के बुद्धि में आ न सके। तुमको बाप रोज कहते हैं अपने 84 जन्मों को बुद्धि में लाओ। स्वदर्शनचक्र तो तुम ब्राह्मणों को ही होता है। उन्हों ने तो कृष्ण को विष्णु को स्वदर्शन चक्र दे दिया है। ऐसी2 वन्डरफुल कहानियां बैठ लिखी है। ता अभी वन्डरफुल गलता है। तुमको कहते हैं तुम शास्त्रों को नहीं मानते हो बोलो हम तो बहुत ही शास्त्र पढ़े परन्तु जब भगवान आकर ज्ञान देते हैं जिस से सदगति होती है तो फिर उसमें शास्त्र आद की दरकार नहीं रहती। बाप कहते हैं मैं हूं पतितपावन। मनुष्य तो ऐसे कह न सके। सतयुग में तो पुकारते ही नहीं। टाईम पर ही सुनवाई होती है। कोर्ट में जाना होता है तब ही सुनवाई होती है। जेल से छुड़ाये देते हैं। तो अभी उनकी श्रीमत पर चलना पड़े। बाप समझाते रहते है ऐसे2 करो। दोनो इकट्ठे हैं ना। यह भी किसको देखेगा। समझता है इनको शान्ति का दान देना है। बेहद की शान्ति है ना। तो उनको भी एकदम शान्त कर देते हैं। दूसरा भल कोई कितना भी उनको देखे शान्ति नहीं होगा। देखने से ही मालूम पड़ता है। यह हमारे घराने का नहीं है। यह तो आसुरी घराने का है। झट पता पड़ जाता है। जैसे डाक्टर्स लोग एक्सपैरिमेन्ट्स करते हैं ना। यह भी बाप आत्मा को देखते हैं। आत्मा को कशिश होती है। यह हमारा बाप है। कोई गन्दा होगा तो उनको शान्ति की कशिश नहीं होगी। यह सभी है सर्विस एवुल बच्चों का काम। नब्ज देखनी है। इस कशिश से सुनते हैं। बाप को याद कर फिर देखो यह आत्मा हमारे कुल की है?? अगर होगी तो एकदम शान्त हो जावेंगे। उठते-बैठते बात करते इस समय ही देखेंगे शान्त हो जावेंगे। तुम थोड़ा ही सिर्फ कहेंगे शिव बाबा को जानते हो? शिव बाबा से बेहद का वर्सा मिलता है। स्वर्ग का मालिक बनते हैं। यह याद आता है? दुनिया में यह थोड़े ही किसको पता है। इन ल०ना० को वर्सा कहां से मिला। तुम अभी अभी आ गये हो। अन्त तक सैपलिंग निकलते आवेंगे। यह ड्रामा चला रहता है। डैस्टीनी भी मिलते रहते हैं। ऐसे2 सर्विस करो। जहां सन्यासी है उन्हों के सामने जाओ। जरूर सेन्टर खोलो। ल०ना० के मंदिर में सेन्टर खोलो। तो तुमको समझाने में सहज होगा। यह डबल सिरताज कैसे बने हैं हम आप को समझाते हैं। सन्यासी तो राजयोग सिखा न सके। ड्रामा अनुसार बच्चे यह सब करने भी रहते हैं। आपे ही विचार सागर मंथन कर पाईन्ट निकालते हैं। यह है ही तुम बच्चों के लिए। पाईन्ट निकालनी होती है। जो इस कुल के होंगे उनको ही रस बैठेगा। एकदम चटक पड़ेगा। जैसे कोई मरे हुये को सांस पड़ जाता है। उनको जीते दान मिलता है। विश्व के मालिक बन जाते हो। गीता में अक्षर कितनी अच्छी है। परन्तु किसकी भी बुद्धि बैठती ही नहीं है। मामेकं याद करो तो विश्व के मालिक बन जावेंगे। जरूर संगम युग ही होगा, बाप भी होगा। जैसे और त्योहार है वैसे गीता पढ़ने का त्योहार भी चला आता है। बाप आते ही है सदगति करने। जितनी जो धारणा करते हैं उतनी वह सर्विस करते हैं। सबजैक्ट्स तो बहुत हैं। मण्डली को भी 100 मार्क्स की मदद मिलेगी। कितने को सुख देते है। किसका पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जाता। पुरुषार्थ ऊंच बनने का करना चाहिए। सर्विस बिगर डबल सिरताज कैसे बनेंगे। गृहस्थव्यवहार में रहते मामेकं याद करो। ईश्वर को पैसे आद की दरकार ही नहीं। वह तो दाता है ना। ईश्वर ने यह सब दिया है। अच्छा फिर लिया तो रोते क्यों हो। बड़ी समझ चाहिए। बाप को तो बहुत युक्ति से समझाना पड़ता है।

ओमशान्ति।